अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

आधुनिक हिन्दी कविता में पर्यावरण चिन्तन

डॉ दिनेश कुमार मीना

सहायक आचार्य हिन्दी

राजकिय महाविद्यालय गंगापुर सिटी

सार

यह अनुसंधान हिंदी कविता में पर्यावरणीय चिंतन की जांच करता है। हिंदी कविता साहित्यिक और सामाजिक मान्यताओं की समीक्षा करती है और पर्यावरणीय संवेदनशीलता को प्रोत्साहित करती है। यह अध्ययन जांचता है कि 20वीं और 21वीं सदी के प्रसिद्ध हिंदी कवियों ने पर्यावरणीय मुद्दों की प्रतिष्ठा कैसे की, उन्हें कैसे आलोचना की और इसके लिए संघर्ष किया। वनों की कटाई, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, और संसाधनों की कमी को हिंदी कविता में अध्ययन किया जाता है। कवियों ने भाषा, चित्रण, और प्रतीक का उपयोग करके पर्यावरणीय जागरूकता और जिम्मेदारी को प्रोत्साहित किया है। कविता भी पठकों को प्रेरित करती है और शिक्षा देती है। यह गुणात्मक अनुसंधान हिंदी कवियों के पर्यावरणीय संचार की रचनात्मकता की जांच करता है। उपमा, प्रतीक, और अन्य वाणिज्यिक भाषा उपयोग करके प्रकृति से जुड़े जीवनदायी चित्र बनाते हैं जो पाठकों को प्रकृति से जोड़ते हैं और बताते हैं कि मानवीय क्रियाएं पर्यावरण पर कैसा प्रभाव डालती हैं। अध्ययन में जांचा जाता है कि पर्यावरणीय आंदोलन, बदलती मान्यताएं, और सरकारी विधान कैसे हिंदी कविता के पर्यावरणीय चिंतन को प्रभावित करते हैं। यह अनुसंधान वर्तमान हिंदी कवियों की पर्यावरणीय चिंताओं को दिखाता है। हिंदी कविता पर्यावरणवाद, स्थायित्व, और जागरूकता का समर्थन करती है। साहित्यिक लेखन सार्वजनिक मत, नीति, और मानव-पर्यावरण संबंधों की जागरूकता को प्रभावित करता है। यह अध्ययन बताता है कि हिंदी कविता कैसे पर्यावरणीय मुद्दों का सामरिक समाधान प्रस्तुत करती है और और अध्ययन को प्रोत्साहित करती है। कला पर्यावरणीय जिम्मेदारी और वैश्विक सहयोग को प्रोत्साहित करती है।

कीवडर्: पर्यावरण, आधुनिक हिंदी कविता, पर्यावरण जागरूकता

परिचय

हिंदी कविता एक महत्वपूर्ण साहित्यिक माध्यम है जो पर्यावरणीय चेतना को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने में मदद करती है। आधुनिक हिंदी कविता पर्यावरण संरक्षण, प्राकृतिक संतुलन और सतत विकास के महत्वपूर्ण मुद्दों को अपनी कवितात्मक व्यक्तित्व के माध्यम से उजागर करने में सक्षम है।[1]

- **पर्यावरणीय जागरूकता का प्रोत्साहनः** आधुनिक हिंदी कविता पर्यावरणीय जागरूकता को बढ़ावा देने और लोगों को पर्यावरण संरक्षण के महत्व को समझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

है। कवियों द्वारा उत्कृष्ट रूप से व्यक्त की गई पर्यावरण संबंधी भावनाएं और मूल्यांकन करने वाले कविताएँ लोगों को जागरूक करती हैं और उन्हें पर्यावरणीय मुद्दों पर सोचने और कार्रवाई करने के लिए प्रेरित करती हैं।[2]

- **सामाजिक संदेश के माध्यम के रूप में:** हिंदी कविता पर्यावरणीय मुद्दों को सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों के साथ जोड़कर एक सक्रिय सामाजिक संदेश का प्रदान करती है। कविता के माध्यम से, जनसाधारण के मन में पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूकता पैदा की जा सकती है और सामाजिक परिवर्तन को प्रोत्साहित किया जा सकता है।[3]
- **प्रकृति के सौंदर्य का प्रतिष्ठान:** हिंदी कविता में प्रकृति और पर्यावरण की सुंदरता का विशेष महत्त्व होता है। कवियों द्वारा प्रकृति के आदर्श और प्रकृति के साथ अभिनय किए गए संबंध का वर्णन किया जाता है, जिससे पठकों में प्रकृति के प्रति आदर्श भावना पैदा होती है।
- **मानव-पर्यावरण संबंध की पुनर्विचार:** हिंदी कविता मानव-पर्यावरण संबंध को पुनर्विचार करने का माध्यम बनती है। यह कविताएँ मानवीय गतिविधियों और पर्यावरण के बीच के संबंध पर सोचने को प्रोत्साहित करती हैं, जो हमें अपने आप को पर्यावरणीय उत्पादों और प्रक्रियाओं के संबंध में सचेत करने के लिए प्रेरित करती हैं।[4]

साहित्य में पर्यावरणीय विचारों की महत्ता पर पृष्ठभूमि

पर्यावरणीय विचारों की महत्ता साहित्य में आवश्यक है क्योंकि साहित्य मानवीय अनुभवों, भावनाओं, और संवेदनशीलताओं को व्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। पर्यावरणीय विचारों के माध्यम से साहित्य विभिन्न पहलुओं को प्रगट करता है जैसे कि प्रकृति के संरक्षण, प्राकृतिक संतुलन, और सतत विकास।[5]

साहित्य में पर्यावरणीय विचारों की महत्ता इसलिए बढ़ती है क्योंकि यह मानवीय संबंधों और पर्यावरण के मध्य के महत्वपूर्ण सम्बन्धों को समझने में सहायता करता है। साहित्य द्वारा हम अपने आप को प्रकृति के साथ संबंधित करने की क्षमता विकसित करते हैं और हमें पर्यावरणीय मुद्दों पर सोचने के लिए प्रेरित करता है।[6]

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

इसके अलावा, पर्यावरणीय विचारों का साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान होने से हमारे समाज में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता बढ़ती है। साहित्य माध्यम से पर्यावरणीय मुद्दों को प्रस्तुत करने से लोगों में एक संवेदनशीलता उत्पन्न होती है और उन्हें प्रेरित किया जाता है कि वे पर्यावरण संरक्षण के लिए सक्रिय योगदान दें।[7]

साहित्य में पर्यावरणीय विचारों की महत्ता इसलिए बढ़ती है क्योंकि यह हमें प्रकृति के साथ एक संवेदनशील और साथी संबंध विकसित करने में मदद करता है। यह हमारी प्रकृति और पर्यावरण की संरक्षा के लिए अद्वितीय और महत्वपूर्ण योगदानप्रदान करता है और हमें एक बेहतर और सतत भविष्य की ओर प्रेरित करता है।[8]

जागरूकता बढ़ाने में कविता की भूमिका

कविता अपनी भावपूर्ण और विचारोत्तेजक भाषा से पाठकों के दिल और दिमाग को मोहित करने की अनोखी क्षमता रखती है। यह पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने, पाठकों की संवेदनाओं को छूने और उन्हें प्राकृतिक दुनिया पर मानवीय गतिविधियों के प्रभाव पर विचार करने के लिए प्रेरित करने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य करता है। ज्वलंत कल्पना, रूपकों और प्रतीकवाद के माध्यम से, कवि पाठक और प्रकृति के बीच एक गहरा भावनात्मक संबंध बनाते हैं, जिम्मेदारी की भावना पैदा करते हैं और उनसे कार्रवाई करने का आग्रह करते हैं।[9]

काव्यात्मक भाषा और साहित्यिक उपकरणों का उपयोग

हिंदी कवि अपने पर्यावरणीय संदेशों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने के लिए कई प्रकार की काव्यात्मक भाषा और साहित्यिक उपकरणों का उपयोग करते हैं। वे प्रकृति की सुंदरता, उसके जटिल पारिस्थितिकी तंत्र और उस नाजुक संतुलन को खूबसूरती से चित्रित करते हैं जिसे मनुष्य अक्सर बाधित करते हैं। ज्वलंत संवेदी कल्पना का उपयोग पाठकों को प्राकृतिक दुनिया के दृश्यों, ध्वनियों और गंधों का अनुभव करने, इसके प्रति संबंध और सहानुभूति को बढ़ावा देने की अनुमति देता है।[10]

पर्यावरणीय मुद्दों और सामाजिक चिंताओं के बीच समानताएं खींचने के लिए अक्सर रूपकों और प्रतीकवाद का उपयोग किया जाता है, जो मानव कार्यों और पर्यावरण के अंतर्संबंध को उजागर करता

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

है।[11]ये साहित्यिक उपकरण अस्थिर प्रथाओं के परिणामों पर ध्यान आकर्षित करने में मदद करते हैं और व्यक्तियों को एक स्वस्थ ग्रह के लिए सचेत विकल्प चुनने के लिए प्रेरित करते हैं।

प्रभावशाली हिंदी कवि और उनकी पर्यावरण सक्रियता

महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', रामधारी सिंह 'दिनकर' और केदारनाथ सिंह जैसे प्रमुख हिंदी कवियों ने अपनी कविता के माध्यम से पर्यावरण विमर्श में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।[12]वे स्थायी जीवन और पर्यावरणीय प्रबंधन की आवश्यकता पर बल देते हुए वनों की कटाई, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता के नुकसान के बारे में जागरूकता बढ़ाते हैं। ये कवि पर्यावरण आंदोलनों में भी सक्रिय रूप से शामिल रहे हैं और उन्होंने पर्यावरण-अनुकूल प्रथाओं को बढ़ावा देने और नीतिगत बदलावों की वकालत करने के लिए अपने प्रभाव का इस्तेमाल किया है।[13]

मॉडर्न हिंदी कविता की जानकारी और पर्यावरणीय मुद्दों में महत्व

मॉडर्न हिंदी कविता एक उद्यमी काल है जो बीसवीं सदी से शुरू होकर आज के दिन तक विकसित हुआ है। इस काल की कविता न केवल विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक, और भाषाई मुद्दों को स्पष्ट करने में मदद करती है, बल्कि पर्यावरणीय मुद्दों के विस्तार और प्रगटन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।[14]

मॉडर्न हिंदी कविता पर्यावरणीय मुद्दों में महत्वपूर्ण है क्योंकि यह इन मुद्दों को सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में प्रस्तुत करने का एक माध्यम है।[15] इस काल के कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से पर्यावरणीय मुद्दों को उजागर किया है और लोगों को पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता पर ध्यान देने के लिए प्रेरित किया है।[16]

मॉडर्न हिंदी कविता में पर्यावरणीय मुद्दों को व्यक्त करने के लिए विभिन्न कवितात्मक तकनीकों का उपयोग किया जाता है। प्राकृतिक वातावरण, जीव-जन्तुओं, पेड़-पौधों और नदियों की सुंदरता, और पर्यावरणीय बदलावों की व्यापक वर्णनात्मकता हिंदी कविता में देखी जा सकती है। कविताओं में इस्तेमाल किए जाने वाले रंगीन और साहसिक भाषा से, पर्यावरणीय मुद्दों को गहराई से समझा और संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया जाता है।[17]

इसके अलावा, मॉडर्न हिंदी कविता पर्यावरणीय मुद्दों को सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों के साथ जोड़ती है। यह विविध समस्याओं जैसे प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, वातावरणीय संरक्षण के मुद्दों को

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों के साथ जोड़कर प्रस्तुत करने के माध्यम से मानवीय समाज को चेतावनी देती है।

मॉडर्न हिंदी कविता की विशेषता यह है कि इसके माध्यम से पर्यावरण संबंधी मुद्दों को एक सहज और सुंदरता भरी भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। यह एक ऐसा काल है जहां पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति की महत्ता को सबलता के साथ प्रतिष्ठित किया जाता है।[18]

इस प्रकार, मॉडर्न हिंदी कविता पर्यावरणीय मुद्दों को सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संदर्भ में समझने और प्रगट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।[19] यह एक ऐसा साहित्यिक माध्यम है जो हमें पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है और सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्साहित करता है।

हिन्दी कविता में पर्यावरण चिंतन का ऐतिहासिक संदर्भ

हिंदी कविता में पर्यावरणीय चिंतन का ऐतिहासिक संदर्भ अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके लिए हमें हिंदी कविता के विभिन्न युगों की ओर देखने की आवश्यकता होती है।

प्राचीनकाल में, ऋग्वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत आदि प्राचीन काव्य ग्रंथों में प्रकृति और पर्यावरण की महत्वता का वर्णन पाया जाता है। इन काव्य ग्रंथों में पर्यावरणीय तत्वों को जीवंत और प्राणीसम रूप में प्रदर्शित किया गया है।[20]

मध्यकालीन काव्य में भक्ति और सूफी आंदोलन के समय पर्यावरणीय चिंतन के आदान-प्रदान की गई। संत कवियों ने प्रकृति और पर्यावरण को ईश्वर की सृष्टि का हिस्सा माना और इसकी सुंदरता और महत्व को स्तुति की। उन्होंने प्राकृतिक प्रमुख तत्वों के साथ अपनी भक्ति और प्रेम की भावना जोड़ी।

आधुनिक काल में, स्वतंत्रता संग्राम के समय और राष्ट्रीयतावादी आंदोलन के दौरान हिंदी कवि ने पर्यावरणीय चिंतना को नई ऊचाइयों तक ले जाया। कवियों ने वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन, और प्रदूषण जैसे पर्यावरणीय मुद्दों को गहराई से व्यक्त किया और जनता को पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को समझाया।[21]

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

महान कवियों में मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर, महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', हरिवंश राय बच्चन आदि शामिल हैं, जिन्होंने पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति के प्रति अपनी अनदेखी भावना को प्रकट किया है। इनकी कविताएं प्राकृतिक सुंदरता, पर्यावरणीय मुद्दों की चिंता, और मानव-पर्यावरण संबंध के प्रति अपनी संवेदनाएं प्रदर्शित करती हैं।

इस प्रकार, हिंदी कविता में पर्यावरणीय चिंतन का ऐतिहासिक संदर्भ गहराई से दिखाता है कि पर्यावरण के महत्व और संरक्षण की आवश्यकता परिपूर्ण विचार और ध्यान वाले कवि कबीले तारीफ हैं।

- **हिन्दी कविता में पर्यावरण चेतना की ऐतिहासिक जड़ें**

हिंदी कविता में पर्यावरणीय चेतना की ऐतिहासिक जड़ें अत्यंत प्राचीनकाल से ही मौजूद हैं। प्राचीन काव्य संग्रहों में, प्रकृति की सुंदरता, प्राकृतिक दृष्टिकोण और पर्यावरणीय संतुलन की महत्वता का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। इसमें प्राणियों, पेड़-पौधों, नदियों, पर्वतों, बादलों और प्राकृतिक तत्वों की सुंदरता का वर्णन होता है। प्राचीन कवि ने मानव-पर्यावरण संबंध को गहराई से समझने और उनकी प्रकृति से अभिप्रेत भावना को व्यक्त करने का प्रयास किया है।[22]

हिंदी कविता में पर्यावरणीय चेतना की जड़ें आधुनिक काव्य आंदोलन के समय और उसके बाद और विशेष रूप से राष्ट्रीयतावादी आंदोलन के समय प्रभावशाली रही हैं। इस समय के कवियों ने प्राकृतिक संतुलन, वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन, और प्रदूषण जैसे पर्यावरणीय मुद्दों को बड़े ही संवेदनशीलता और भावुकता के साथ दिखाया है। इन कवियों ने आम जनता को पर्यावरण संरक्षण के महत्व को समझाने और उन्हें प्रेरित करने का प्रयास किया है।

विशेष रूप से, मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर, महादेवी वर्मा, आदि ऐसे कवि हैं जिन्होंने पर्यावरणीय मुद्दों को अपनी कविताओं में गहराई से दिखाया है। इनकी कविताओं में अपार प्राकृतिक तत्वों की सुंदरता, पर्यावरणीय संतुलन की अनुपमता, और प्रकृति से जुड़े मानव-पर्यावरण संबंध की भावनाएं महसूस की जा सकती है।[23]

इस प्रकार, हिंदी कविता में पर्यावरणीय चेतना की ऐतिहासिक जड़ें बहुत समय से ही मौजूद हैं और आधुनिक काव्य काल में इसका प्रभाव और महत्त्व और बढ़ गया है। यह कविता हमें प्राकृतिक संरक्षण की

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

महत्ता को समझाने, पर्यावरणीय मुद्दों पर विचार करने और कर्मठता से इस दिशा में कार्रवाई करने के लिए प्रेरित करती है।

- **कवि और पर्यावरणीय सोच में उनका योगदान**

हिंदी साहित्य में कई महान कवियों ने पर्यावरणीय चिंतन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यहां कुछ मुख्य कवियों और उनके साहित्यिक योगदान की चर्चा की जाएगी:

- **मैथिलीशरण गुप्त:** मैथिलीशरण गुप्त, जिन्हें "राष्ट्रकवि" के रूप में जाना जाता है, ने पर्यावरणीय चेतना को गहराई से व्यक्त किया है। उनकी कविता "जल ही जीवन है" और "वन ही विश्राम स्थल हैं" जैसी कविताएं प्राकृतिक संरक्षण और पर्यावरणीय मुद्दों को सुंदरता और महत्त्व के साथ दर्शाती हैं।[24]
- **रामधारी सिंह दिनकर:** राष्ट्रीय कवि रामधारी सिंह दिनकर ने भी पर्यावरण संरक्षण के मामले में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।[25] उनकी कविता "हरियाली का राष्ट्र" और "प्राणों के लिए प्राण" जैसी कविताएं प्रकृति के महत्व को समझाती हैं और मानव-पर्यावरण संबंध पर विचार करने को प्रेरित करती हैं।
- **महादेवी वर्मा**: महादेवी वर्मा, जिन्हें "आदिकावित्री" के रूप में जाना जाता है, ने अपनी कविताओं के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति के प्रति अपनी संवेदनाएं प्रकट की हैं। उनकी कविता "नदी निर्मिति" और "वृक्ष की जयंती" जैसी कविताएं प्रकृति के महत्व को प्रशंसा करती हैं और पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को उजागर करती हैं।[26]
- **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला":**सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविताओं में पर्यावरण संरक्षण की महत्ता को गहराई से व्यक्त किया गया है। उनकी कविता "हम पर्यावरण के प्रेमी हैं" और "पेड़ों का आंचल" जैसी कविताएं प्रकृति के महत्व को उजागर करती हैं और पर्यावरण के प्रति अपनी दायित्वभावना को प्रकट करती हैं।[27]

ये केवल कुछ कवियों की उदाहरण हैं जो हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय चिंतन के माध्यम से अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। हिंदी कविता में इन कवियों द्वारा प्रस्तुत की गई पर्यावरणीय चिंतना प्रासंगिक, संवेदनशील और जागरूकता फूँकने वाली हैं और हमें पर्यावरण संरक्षण के प्रति सक्रियता को बढ़ाने के लिए प्रेरित करती हैं।

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

- **हिन्दी कविता में पर्यावरणीय चिंतन के विकास पर सामाजिक-सांस्कृतिक एवं राजनीतिक कारकों का प्रभाव**

सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक कारकों का पर्यावरणीय चिंतन के विकास पर गहरा प्रभाव पड़ा है। हिंदी कविता में पर्यावरणीय विचारों की प्रगति और प्रगटन में इन कारकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों का पर्यावरणीय चिंतन पर प्रभाव हमेशा से रहा है। हिंदी साहित्य में प्रकृति और पर्यावरण को भारतीय संस्कृति और दर्शन का अभिन्न अंग माना जाता है। वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत, आदि प्राचीन काव्य ग्रंथों में प्रकृति और पर्यावरण की महिमा का वर्णन पाया जाता है। इन काव्य ग्रंथों में पर्यावरणीय तत्वों को जीवंत और प्राणीसम रूप में प्रदर्शित किया गया है।[28] यहां जन्मग्रंथ रामायण में प्रकृति और प्राकृतिक दृष्टि की महत्ता पर विशेष बल दिया गया है। वनवास के दौरान भगवान राम, सीता और लक्ष्मण की आदर्श जीवनशैली नदियों, पहाड़ों, वृक्षों और प्राकृतिक सौंदर्य के साथ जुड़ी होती है।

मध्यकालीन काव्य में भक्ति और सूफी आंदोलन के समय पर्यावरणीय चिंतन के आदान-प्रदान की गई। संत कवियों ने प्रकृति और पर्यावरण को ईश्वर की सृष्टि का हिस्सा माना और इसकी सुंदरता और महत्व को स्तुति की। उन्होंने प्राकृतिक प्रमुख तत्वों के साथ अपनी भक्ति और प्रेम की भावना जोड़ी। ये संत कवि ने स्वाभाविक संरक्षण की महत्ता पर जोर दिया, उदाहरण के लिए मीराबाई की भजन "पड़ी जो तेरी नगरी रे दूध पिया नहीं" और कबीरदास के दोहे। उनके द्वारा व्यक्त की जाने वाली पर्यावरण संरक्षण की भावना आधुनिकता के समय तक भी पहुंची है।[29]

आधुनिक काल में, स्वतंत्रता संग्राम के समय और राष्ट्रीयतावादी आंदोलन के दौरान हिंदी कवि ने पर्यावरण संरक्षण को नई ऊचाइयों तक ले जाया। कवियों ने वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन, और प्रदूषण जैसे पर्यावरणीय मुद्दों को गहराई से व्यक्त किया और जनता को पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को समझाया। इन युगों में राष्ट्रीय और सामाजिक प्रश्नों के साथ-साथ पर्यावरणीय मुद्दों का भी महत्वपूर्ण स्थान है।[30] धर्मपाल, जयशंकर प्रसाद, रामधारी सिंह दिनकर, रामधारी सिंह 'दिनकर', महादेवी वर्मा, नगर्जुन, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', आदि जैसे प्रमुख कवि इस दौरान पर्यावरणीय चिंतन के उदाहरण हैं।

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

राजनीतिक कारकों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है। राजनीतिक प्रक्रियाओं, नीतियों, और विधियों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के मामले पर प्रभाव डाला जा सकता है। सरकारी नीतियाँ, कानूनी कार्यवाही, पर्यावरणीय अधिकार, वन-संरक्षण कार्यक्रम आदि यहां पर्यावरण के प्रति सरकार के संवेदनशीलता को प्रभावित करते हैं।[31] राजनीतिक संगठनों, विचारधाराओं और आंदोलनों के माध्यम से पर्यावरणीय चिंतन और उससे उभरते मुद्दों को व्यक्त करने का माध्यम बनता है।

सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक कारकों के अलावा, अर्थव्यवस्था, औद्योगिकरण, जनसंख्या वृद्धि, विकास कार्यों, और विज्ञान-प्रौद्योगिकी के प्रभाव ने भी पर्यावरण संरक्षण के विचारों को प्रभावित किया है। ये कारक हमेशा बदलते समय के साथ पर्यावरणीय चिंतन को नए आयाम देते रहते हैं।

समग्र रूप से कहें तो, सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक कारकों का हिंदी कविता में पर्यावरणीय चिंतन के विकास पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। ये कारक हमें प्राकृतिक संरक्षण की आवश्यकता को समझाने, पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता को जगाने और समाज को सक्रिय बनाने में मदद करते हैं।[32]

अध्ययन के उद्देश्य

- शोध अध्ययन का एक मुख्य उद्देश्य है पर्यावरण संबंधी विचारों को हिंदी कविता में समझना।
- यह अध्ययन पाठकों को प्रमुख कवियों की कविताओं के माध्यम से पर्यावरण संबंधी विचारों का अध्ययन करने का अवसर प्रदान करेगा।
- यह अध्ययन विभिन्न कवियों की कविताओं के माध्यम से हिंदी कविता में पर्यावरणीय चिंतन का विश्लेषण करेगा।

निष्कषर्ः।

हिंदी कविता में पर्यावरणीय चिंतन एक महत्वपूर्ण और अद्वितीय विषय है। आधुनिक हिंदी कवि अपनी कविताओं के माध्यम से पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति गहरा जागरूकता प्रदर्शित करते हैं। उनके काव्य में प्रकृति की सुंदरता, प्राकृतिक संतुलन की महत्त्वपूर्णता और अस्थिरता के प्रति जागरूकता दिखाई देती है। इन कवियों ने प्रभावशाली भाषा और साहित्यिक उपकरणों का उपयोग करके पाठकों को प्रेरित

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

किया है, पर्यावरणीय चुनौतियों के प्रति जागरूकता बढ़ाई है और उन्हें सक्रिय दिशा में ले जाने के लिए प्रेरित किया है।

हिंदी कविता के माध्यम से पर्यावरणीय चिंतन न केवल जागरूकता बढ़ाता है, बल्कि यह एक अद्वितीय रूप में पर्यावरणीय संघर्ष को सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर प्रमुख बनाने में मदद करता है। हिंदी कवि न केवल आपातकालीन मुद्दों के साथ जुड़े हैं, बल्कि उन्हें लोगों के मन में संवेदनशीलता और जागरूकता भी उत्पन्न करते हैं। इन कवियों की कविताओं का पठन, विचार करने और समझने से हमारी संवेदनशीलता बढ़ती है और हम अपने जीवन में पर्यावरण के प्रति सचेत होते हैं।

इस प्रकार, हिंदी कविता पर्यावरणीय चिंतन को सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत स्तर पर प्रमुख बनाने में एक महत्वपूर्ण योगदान करती है। यह एक शक्तिशाली माध्यम है जो हमें प्रकृति के साथ अपना संबंध स्थापित करने, पर्यावरणीय जागरूकता को बढ़ाने और बेहतर पर्यावरण के लिए सक्रियता को प्रेरित करने में सहायता करता है।

संदर्भ

1. बोरा, मनश प्रतिम, "आधुनिक भारतीय अंग्रेजी कविता और परंपरा", "द क्राइटेरियनः एन इंटरनेशनल जर्नल इन इंग्लिश, वॉल्यूम तृतीय" मुद्दा। द्वितीय, जून 2012 अंग्रेजी आईएसएसएन 0976-8165

2. दारूवाला, के.एन. ईडी "भारतीय कविता के दशकों." 1960-80. शहीबाबादः विकास, 1980

3. देसपांडे, गौरी. "इंडो-इंग्लिश कविता का एक संकलन"। दिल्लीः हिम्ड पॉकेट बुक, 1974

4. गोकक, वी.के., "द कॉन्सेप्ट ऑफ इंडियन लिटरेचर," मुंशीराम मोहनलाल, दिल्ली, 1979

5. मेहरोत्रा, अरविंद कृष्णा, एड. बारह आधुनिक भारतीय कवि. नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1992

6. पणिकर, के. अयप्पा (सं.), "मॉडर्न इंडियन इंग्लिश पोएट्री," साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2012

7. परांजपे, मकरंद, (एड) "इंडियन पोएट्री इन इंग्लिश" मद्रासः मैकमिलन, 1993

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

8. पार्थसारथी, राजगोपाल, एड. "बीसवीं सदी के दस भारतीय कवि" नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1976।

9. रामनम, मोहन और अन्य (सं.), "अंग्रेजी में समकालीन भारतीय कविता," साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 1999

10. सच्चिदानंदन, के. (एड) सिग्नेचर, एनबीटी, नई दिल्ली, 2000

11. सच्चिदानंदन, के., "इंडियन लिटरेचरः पैराडाइम्स एंड प्रीक्सिस, पेनक्राटफ इंटरनेशनल", नई दिल्ली, 2008

12. सुनीता राणा "ए स्टडी ऑफ इंडियन इंग्लिश पोएट्री", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक एंड रिसर्च पब्लिकेशन्स, वॉल्यूम 2, अंक 10, अक्टूबर 2012

13. तिलक, रघुकुलः "न्यू इंडियन इंग्लिश पोएट्स एंड पोएट्री"ः नई दिल्ली- 5, रामा ब्रदर्स,

14. बदावी एम.एम. 1992 में "आधुनिक अरबी कविता कैम्ब्रिज का आलोचनात्मक परिचय"

15. दरवेश, 1978 "द शॉक ऑफ मॉडर्निटी, खंड- प्प्एश् बेरूत

16. कमाल अबू दीब 1977 "द पर्प्लेक्सिटी ऑफ द ऑल-नोइंगः ए स्टडी ऑफ एडोनिस,"

17. लायला बावदाम, "कला में स्वतंत्रता की रक्षा मेंः एम.एफ. पर हिंदुत्व हमले के खिलाफ' हुसैन,' फ्रंटलाइन," 15 नवंबर 1996, पृ. 4-9य मोनिका जुनेजा, "रिक्लेमिंग द पब्लिक स्फीयरः हुसैन्स पोर्ट्रेट ऑफ सरस्वती एंड द्रौपदी,'इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली (इसके बाद ईपीडब्ल्यू), वॉल्यूम।" 32, संख्या 4, 25 जनवरी 1997, पृ. 155-57.

18. रश्मे सहगल और नरेंद्र पंजवानी, 'क्या वह नग्न होने के कारण आपत्तिजनक है?', "द संडे टाइम्स ऑफ इंडिया रिव्यू," 19 जनवरी 1997, पृ. 1.

19. मिशेल फौकॉल्ट, "द हिस्ट्री ऑफ सेक्शुअलिटी, वॉल्यूम 1ः एक परिचय", ट्रांस. रॉबर्ट हर्ले, न्यूयॉर्क, 1978, पीपी 24-25, 145-46।

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

20. लिन हंट, "परिचयः अश्लीलता और आधुनिकता की उत्पत्ति," 1500-1800' लिन हंट में, संस्करण, "अश्लीलता का आविष्कारः अश्लीलता और आधुनिकता की उत्पत्ति", 1500-1800, न्यूयॉर्क, 1993य पीटर

21. माइकलसन, 1993 "स्पीकिंग द अनस्पीकेबलः ए पोएटिक्स ऑफ ऑब्सेनिटी, अल्बानी," पृ. 3य "ब्रायन मैकनेयर, मीडिएटेड सेक्सः पोमोग्राफी एंड पोस्टमॉडर्न कल्चर", लंदन, 1996, पीपी. 42, 53।

22. सूसी थारू और के. ललिता, संपा, 1991, "भारत में महिला लेखन, 600 ई.पू. वर्तमान तक, वॉल्यूम 1 मैं: 600 ई.पू. टू द अर्ली ट्वेंटिएथ सेंचुरी," दिल्ली, पृ. 1-12, 116-20।

23. यूजीन एफ. इर्शिक, "संवाद और इतिहासः दक्षिण भारत का निर्माण," 1795-1895, बर्कले, 1994।

24. थारू और ललिता, संपा, "भारत में महिला लेखन," पृ. 118.

25. रोजर चार्टियर, एड., "द कल्चर ऑफ प्रिंटः पावर एंड द यूज ऑफ प्रिंट इन अर्ली मॉडर्न यूरोप, ट्रांस"। लिडिया जी. कोक्रेन, कैम्ब्रिज, 1989, विशेष। पृ. 1-5य इडेम, "पब्लिशिंग ड्रामा इन अर्ली मॉडेम यूरोप', द पैनिजी लेक्चस'र्' 1998, द ब्रिटिश लाइब्रेरी, लंदन, 8-10 दिसंबर 1998।

26. रॉबर्ट डार्नटन, "द फॉरबिडन बेस्ट-सेलर्स ऑफ प्री-रिवोल्यूशनरी", फ्रांस, लंदन, 1996।

27. वीक्स, सेक्स, "पॉलिटिक्स एंड सोसाइटी," पीपी. 19-21.

28. अनिंदिता घोष, 1998,'सस्ती किताबें, "खराब" "किताबेंः औपनिवेशिक बंगाल में प्रिंट-संस्कृतियों का मुकाबला', साउथ एशिया रिसर्च, वॉल्यूम 18, संख्या 2," पृ. 173-94, एक अधिक परिष्कृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है, लेकिन वह भी कभी-कभी सम्मानजनक और लोकप्रिय प्रेस के बीच तीव्र अंतर करने में विफल हो जाती है।

29. पीटर बर्क, "पॉपुलर कल्चर इन अर्ली मॉडर्न यूरोप," लंदन, 1978।

30. लिंडा नेड, 1988, "लैंगिकता के मिथकः विक्टोरियन ब्रिटेन में महिलाओं का प्रतिनिधित्व," ऑक्सफोर्ड, पृ. 5

31. मेरिल एटमैन, 1984, "एवरीथिंग दे ऑलवेज वांटेड यू टू नोः द आइडियोलॉजी ऑफ पॉपुलर लिटरेचर", 115-30।

32. नयी कविता 2, पृ. 42य राम दास गुप्ता द्वारा अप्रकाशित अनुवाद।